भागीदारी नहीं की थी।

5. 1857 के विद्रोह की असफलता के कारण :

बूढ़े और कमजोर, बहादुर शाह विद्रोह का नेतृत्व करने में असफल थे। विद्रोह में केन्द्रीय नेतृत्व और समन्वय का अभाव था और यह खराब ढंग से संगठित था। विद्रोह केवल थोड़े समय के लिए बड़े क्षेत्र तक फैला। भारत का अधिकांश भाग काफी हद तक अप्रभावित था। हैदराबाद, मैसूर, कश्मीर, त्रावणकोर और राजपूताना की बड़ी रियासतों के साथ-साथ छोटी रियासतों ने भी विद्रोह का विरोध किया।

धनी व्यापारियों और कारोबारीयों के साथ-साथ कई ज़मींन्दारों ने भी अंग्रेजों का समर्थन किया। आधुनिक शिक्षा प्राप्त भारतीयों ने विद्रोह को प्रतिगामी माना। भारतीय सेना के पास पर्याप्त उपकरणों की कमी थी। इन सबके बावजूद अंग्रेजों की पक्कि समझ का अभाव था।

6. 1857 के विद्रोह के स्वरूप :

1857 के विद्रोह के स्वरूप के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रचलित हैं। इस विद्रोह के स्वरूप को निर्धारित करने के बारे में विभिन्न विद्वानो ने अपने विचार प्रकट किये हैं। कुछ इतिहासकारों ने इसे सैनिक विद्रोह तो कुछ ने इसे असैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है।

सर जॉन सीले ने कहा था कि 1857 का विद्रोह महज एक सैनिक विद्रोह था। लेकिन जॉन सीले के विचारों को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। यदि हम इसके आन्तिरीक परीक्षण करें तो हम पायेंगे की यह महज एक सैनिक विद्रोह नहीं था, बल्कि देश का मजदूर वर्ग, किसान वर्ग, जन सामान्य, इत्यादि इस विद्रोह से जुड़ा हुआ था। ऐसे में इस विद्रोह को केवल सैनिक विद्रोह कहना काफी हद तक अनुचित एवं तर्कसंगत नहीं है।

वहीं कुछ इतिहासकारों ने इसे भारत का राष्ट्र विद्रोह भी करार देते हैं। लेकिन हमें इस बात को भी ध्यान रखना चाहिए कि इस विद्रोह के सभी नेता बेशक अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई लड़ रहे थे, किन्तु उनमें एक राष्ट्रवादी दृष्टि का अभाव था। उनमें से किसी के पास ऐसी कोई योजना नहीं थी कि विद्रोह में सफलता के बाद भारत को एक राष्ट्र के रूप में किस प्रकार